बीती को परिवर्तन करो और प्रत्यक्ष प्रमाण बन बाप को प्रत्यक्ष करो

आप सभी का यादप्यार लेते हुए आज जब हम वतन में पहुँची तो आज का दृश्य कुछ न्यारा ही था। हमको याद आता, ऐसा दृश्य २७ वर्षों के बाद हमने देखा। जब बाबा अव्यक्त हुआ था तब ऐसा दृश्य देखा था। तो आज जब वतन में पहुँची तो वतन में चारों ओर लाइट ही लाइट थी। बाबा जैसे बहुत सूक्ष्म लाइट रूप में दिखाई दे रहा था। ऐसे लग रहा था जैसे कोई पर्दे के पीछे है, लेकिन पर्दा था नहीं। बाबा का हाथ वरदान देने के रूप में था। जितना मैं आगे जाना चाहती थी कि बाबा से मिलूं, वह नहीं हुआ। थोड़ा आगे जाकर खड़ी हो गई। थोड़े टाइम के बाद फिर उसी लाइट में अक्षर आये – **''बीती को परिवर्तन करो और प्रत्यक्ष प्रमाण बन बाप को प्रत्यक्ष करो''।** यह जैसे स्लोगन की रीति से लाइट के ही शब्द लिखे हुए थे। उसके बाद बाबा गुम हो गया। मैं कुछ समय तो देखती रही। फिर साकार वतन में आ गई।

(गुल्जार दादी के शब्दों में) हमें तो ऐसे लगता – जैसे अब बाबा कुछ भी मुख से कहना नहीं चाहता। लेकिन हम बच्चों को अब तक जो इतनी शिक्षायें दी हैं, उन सबका प्रत्यक्ष स्वरूप देखने चाहता है। ओमशान्ति।